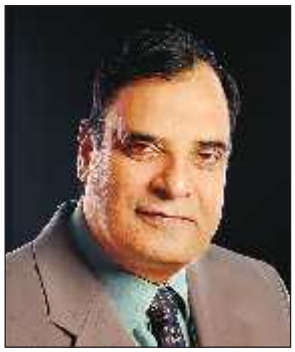

आलोक मेहता

राजनीतिक भविष्य का 'गुरुमंत्र'

चार विधान सभाओं के चुनाव में पराजय के बाद कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने भविष्य के लिए विचार मंथन की आवश्यकता के साथ यह भी कह दिया कि 'अरविन्द केजरीवाल से भी हमें सीखना होगा कि आम जनता के साथ कैसे जुड़ा जाए।' लोकतंत्र में पराजय से सबक लेना निश्चित रूप से जरूरी है। विरोधी के सही तरीकों को अपनाना भी उचित कहा जाएगा। फिर भी कांग्रेस के पुराने जमीनी नेता सांसद सत्यव्रत चतुर्वेदी ने सार्वजनिक रूप से कह दिया कि 'केजरीवाल से राहुल भले ही सीख लें, हमें उसकी जरूरत नहीं है।' चतुर्वेदी की बात इसलिए सही है, क्योंकि (महर्षि) अरविन्द तो डेढ़-दो वर्ष में नेता बने हैं। कांग्रेस या अन्य पार्टियों में दशकों के अनुभवी नेता हैं, जो जनता से जुड़े रहकर 50-60 वर्षों से राजनीति में सक्रिय रहे हैं। कांग्रेस पार्टी के कोषाध्यक्ष मोतीलाल वोरा सामान्य बस, रिक्शे और दिल्ली में ऑटो रिक्शा में घूमते हुए ही जनता के बीच लगातार सक्रिय रहे। आज भी शायद कांग्रेस मुख्यालय में पचीसों पदाधिकारी और पचास प्रवक्ता रहते हुए भी अकेले वह सर्वाधिक कार्यकर्ताओं और दूरदराज से आए लोगों से मिलते हैं। पराजित हो चुके अशोक गहलोत तो 'महर्षि' अरविन्द से अधिक जमीनी कार्यकर्ता रहकर कांग्रेस पार्टी की सफलता-विफलता में साथ रहे हैं। केरल में ए.के. एंटनी की सादगी और जनता के बीच सहजता किसी महर्षि या स्वामी से अधिक रही है। मुश्किल यह है कि राहुल गांधी अब तक अपनी पार्टी के पुराने अनुभवी नेताओं के बजाय 'सोशल मीडिया' में पारंगत युवा साथियों और कंप्यूटर-'गूगल' में दर्ज तथ्यों और आंकड़ों से राजनीति को समझने-चलाने की कोशिश करते रहे हैं।

बहरहाल, इस समय उज्ज्वल राजनीतिक भविष्य के 'गुरुमंत्र' दे सकने वालों की अच्छी-खासी संख्या मानी जा सकती है। अरविन्द केजरीवाल ने दिल्ली विधान सभा में 28 सीटें लाकर कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी को झटके के साथ हिलाकर रख दिया है। वह अब लोक सभा चुनाव की तैयारी में हैं। मतलब दिल्ली विधान सभा की तरह वह लोक सभा चुनाव के बाद नई सरकार बनवाने में निर्णायक भूमिका निभाना चाहते हैं। आम आदमी पार्टी के प्रवक्ता फिरोज बख्त अहमद ने तो एक टी.वी. चैनल पर केजरीवाल को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार भी बता दिया। पार्टी के कुछ नेता और पंडित अजय भांबी जैसे भविष्यवक्ता लोक सभा में केजरीवाल की पार्टी के 100 से अधिक उम्मीदवार जीत सकने की आशा करने लगे हैं। वैसे इस लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से उनकी पालकी का इंतजाम करने वाले भी 'गुरुमंत्र' देने में माहिर हैं। 'बाबा' अन्ना हजारे और केजरीवाल को लोकपाल विधेयक तैयार करने में अहम भूमिका निभाने की पगड़ी राहुल गांधी की पार्टी के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने ही पहनाई थी। इसलिए अन्ना हजारे आज भी सबको अपने ढंग से लोकतंत्र का 'नया रास्ता' दिखा रहे हैं। इसी तरह 'स्वामी' रामदेव हैं। अब वह योग गुरूसे अधिक राजनीतिक गुरू ही नहीं अरबों रुपयों का काला धन ला सकने का फार्मूला भी 'प्रसाद' की तरह बांट रहे हैं। रामलीला मैदान में अन्ना हजारे-केजरीवाल और रामेदव को बड़े पैमाने पर समर्थन दिलवाने में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक 'आचार्य' मोहन भागवत भी राजनीतिक भविष्य का 'गुरुमंत्र' भाजपा ही नहीं अन्य पार्टियों को भी दे रहे हैं। संघ की धारा के अनुरूप 'भाई' नरेन्द्र मोदी का अपना 'विकास मॉडल' है। दूसरी तरफ 'मौलाना' कहे जाने वाले मुलायम सिंह यादव या जयप्रकाश नारायण के आंदोलन से उभरे 'दादा' शरद यादव भी सत्ता की राजनीति के 'गुरुमंत्र' दे रहे हैं। कांग्रेस के सहकारी आंदोलन से निकले शरद पवार तो अब 'झोला छाप' लोगों से बचने की सलाह कांग्रेस को देने लगे हैं।

सवाल यह है कि राहुल गांधी किस गुरू के आंगन में कितना ज्ञान पाने की कोशिश कर सकते हैं? भोजन की अति की तरह ज्ञान की अति दिमाग को भ्रमित कर सकती है। राहुल हों या केजरीवाल उन्हें उज्ज्वल भविष्य के लिए स्वयं स्पष्ट रणनीति बनाकर अपनी पार्टियों के सामने रखनी होगी। दोनों का यह तर्क किसी के गले नहीं उतर सकता कि 'सत्ता' के लिए राजनीति नहीं करना चाहते। सत्ता के बिना वे जनता को दिखाए गए सपने कैसे साकार कर सकते हैं? भ्रष्ट और आपराधिक गतिविधियों से परहेज रखते हुए भी राजनीति की जा सकती है। लेकिन अपने संगठन को आगे बढ़ाकर और जनता का विश्वास जीतने के बाद आप स्वयं कमान संभालने के बजाय मनमोहन सिंह की तरह किसी व्यक्ति को सिंहासन सौंपकर क्या किसी पहाड़ पर ध्यान-मुद्रा में बैठना चाहेंगे? केवल आपके लिए उत्तरदायी होने के बजाय जनता के प्रति जिम्मेदार व्यक्ति के हाथ में नेतृत्व नहीं होना चाहिए?

हाल के विधान सभा चुनावों ने यह भी साबित कर दिया है कि वायदों और कार्यक्रमों के बावजूद उनके क्रियान्वयन का लाभ जनता तक पहुंचाने के लिए सरकारी मशीनरी के साथ मंत्री, सांसद, विधायक, पार्टी पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं का अपने गली-मोहल्ले, गांव-शहर में लोगों से जीवंत सम्पर्क जरूरी है। मोबाइल, ट्विटर, चिट्ठी-पत्री, पोस्टर, टी.वी; रेडियो से थोड़ी मदद हो सकती है, लेकिन आमने-सामने दुःख-सुख बांटने का कोई विकल्प नहीं है। राजीव गांधी ने पंचायती राज की दिशा में जो क्रांतिकारी कदम उठाए, उससे देश में करीब 32 लाख पंच हैं और जो पार्टी इन पंचों को जोड़कर रख सके, उसका मुकाबला कोई राजनीतिक शक्ति नहीं कर सकती। आम आदमी पार्टी वर्तमान व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन की बात कर रही है, लेकिन उनका फार्मूला कितना व्यावहारिक होगा? आखिरकार गांधीवादी, हिंदुत्ववादी, समाजवादी और साम्यवादी विचारों वाले दलों ने भी समय के साथ सामाजिक-आर्थिक नीतियों को बदला है। इसमें कोई शक नहीं कि मजदूरों और किसानों के बल पर खड़ी हुई कम्युनिस्ट पार्टियां देश के कुछ कोनों तक सीमित रह गई हैं। इसी तरह 1977, 1989-90 के दौर में जन आक्रोश में बड़े पैमाने पर उभरी नई पार्टियां सत्ता में आकर अपने लक्ष्य से भटकने के कारण बिखर गईं। इसलिए एक सफलता या विफलता से कोई फार्मूला नहीं बन सकता। जरूरत है- जनता की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए निरंतर सक्रियता की। इससे बड़ा 'मंत्र' कहीं नहीं मिल सकता।

alokmehta7@hotmail.com

अरविन्द केजरीवाल ने दिल्ली विधान सभा में 28 सीटें लाकर कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी को झटके के साथ हिलाकर रख दिया है। वह अब लोक सभा चुनाव की तैयारी में हैं। मतलब दिल्ली विधान सभा की तरह वह लोक सभा चुनाव के बाद नई सरकार बनवाने में निर्णायक भूमिका निभाना चाहते हैं। आम आदमी पार्टी के प्रवक्ता फिरोज बख्त अहमद ने तो एक टी.वी. चैनल पर केजरीवाल को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार भी बता दिया। पार्टी के कुछ नेता और पंडित अजय भांबी जैसे भविष्यवक्ता लोक सभा में केजरीवाल की पार्टी के 100 से अधिक उम्मीदवार जीत सकने की आशा करने लगे हैं।